Tägliches
Unterhaltungs-Blatt
der Berliner Volks-Zeitung

9112 1 6 9 27 (100) 38 46, 9407 19 33 (100) 38 50 (1000), 9838 5 19 (100) 29 47.

Die Nummern, welchen kein Betrag in ( ) beigefügt ist, sind mit 50 Fr., alle übrigen in obigen Serien enthaltenen Nrn. mit 17 Fr. gezogen.

8) Genueser 150 Lire-L. v. 1869.

83. Verlosung am 1. Mai 1911.
Zahlbar am 1. August 1911.

Die Nummern, welchen kein Betrag in () beigefügt ist, sind mit 195 Lire gezogen.

98 114 166 185 198 434 485 718 847
869 961 1140 184 195 220 311 509 529
566 599 635 641 701 763 2195 529 547
566 748 831 854 855 996 3122 139 187
298 361 373 402 429 435 470 475 478
726 (40,000) 817 863 867 (400) 886
951 987 4024 028 031 104 109 189 205
323 592 753 808 895 953 996 5088 101
167 183 185 312 566 622 986 (1000)
6017 142 415 641 705 711 720 (400) 778
915 949 7168 216 244 255 444 589 617
726 745 749 837 848 974 8179 214 240
251 280 479 695 740 745 807 839 891
920 939 953 9037 204 363 414 447 635
728 856 891 985 10016 038 135 136
269 331 435 531 588 618 860 883 902
935 965 999 11103 137 156 296 306
347 387 528 578 728 820 906 908 12021
029 041 092 094 104 124 185 365 (2500)
410 433 (500) 462 498 522 527 561 811
862 13125 187 472 535 616 885 14010
240 323 374 432 877 15023 098 277 355
467 644 821 833 952 962 986 16141 191
288 335 372 432 485 498 853 17000
054 059 128 186 251 438 456 785 821
18339 442 462 528 564 581 815 930
19072 196 305 310 658 899 961 978
982 20019 257 273 322 396 400 435
613 705 748 876 882 916 21065 150
224 527 558 563 616 735 752 860 871
909 932 971 972 22064 088 111 222
358 359 377 494 578 667 868 23040
067 260 272 327 343 411 474 475 502
684 965 24028 154 189 228 246 247
255 290 488 534 549 881 940 979
25082 095 155 249 281 369 (285) 385
417 436 532 606 684 747 760 797 804
807 840 931 963 964 26041 139 165
167 (500) 343 350 513 590 683 685 761
983 27038 053 055 113 121 215 277
434 442 558 578 727 896 28005 295
427 514 601 606 647 809 839 957
29111 216 254 293 362 462 529 636
773 835 (500) 912 915 30115 210 279
376 443 505 541 560 672 726 764 771
798 839 865 875 31019 108 122 128
363 399 407 440 480 481 498 522 656
869 32052 103 125 257 321 406 572
576 602 605 622 670 673 760 764 767
772 943 33125 291 374 580 720 987
34092 343 396 424 445 465 513 565
629 763 776 835 914 946 980 35380
548 569 584 595 660 695 751 971
36047 179 206 233 274 346 372 467
514 616 801 37029 140 202 211 237
302 528 638 777 793 38185 346 480
676 664 671 722 761 826 845 39128
177 236 259 334 349 402 790 843 879
40056 127 202 235 276 433 563 41005
350 356 398 424 473 618 631 850 (285)
953 42011 114 128 236 291 551 565
676 755 43118 285 294 383 465 907
993 44130 221 259 390 403 495 506
680 693 840 899 939 949 45133 239
255 370 510 623 693 698 918 46485
692 605 743 860 47079 206 245 (500)
346 582 610 638 643 833 899 980 992
(400) 48014 154 191 218 382 428 583
(500) 818 863 951 49018 207 354 382
437 582 613 717 50015 022 136 (1000)
212 (5000) 226 289 301 308 309 455
495 726 747 908 969 51005 010 129
312 501 564 707 (400) 778 883 924
52083 103 133 174 232 262 341
404 424 454 575 747 801 837 951
53149 291 308 423 436 469 546
688 692 775 787 871 884 923 979
54010 111 218 220 289 300 453 564
574 601 654 669 670 711 736 803 931
55069 230 281 350 590 612 678 717
844 898 56161 185 270 336 470 514
626 727 783 883 932 57157 236 771
779 58152 158 212 492 537 641 731
747 752 807 59089 138 151 163 389
409 415 495 561 573 613 789 809 970
60042 074 119 208 238 277 357 377
384 411 490 576 594 625 (500) 683 884
892 901 986 61261 293 (285) 603 701
62046 055 301 495 704 715 743 761
(285) 794 832 896 63003 (1000) 037
149 181 291 293 332 347 360 399 412
599 699 772 837 895 (400) 966 64054
242 357 402 460 659 890 926 959 976
983 (285) 984 65099 411 448 472 493
506 507 556 636 899 906 919 66001
038 177 360 642 679 819 859 67072
201 209 240 498 542 616 713 724 794
994 68036 200 339 343 386 390 448
757 921 939 69095 118 219 417 524
567 593 634 731 842 871.

9) Hamburg-Amerikanische Packetfahrt-Aktien-Ges., 4½% zweite Prioritäts-Anleihe.

8. Verlosung am 1. Mai 1911.
Zahlbar am 1. August 1911.

à 1000 M. 13 83 94 108 120 122
196 205 221 274 300 318 328 421 427
492 517 573 695 730 732 768 792 977
1045 048 095 154 156 207 283 298 345
371 456 492 561 600 691 693 745 752
768 803 968 2016 145 188 296 321 359
365 403 416 496 498 502 709 751 778
799 821 887 946 986 994 3037 097 247
333 346 355 377 380 437 438 440 462
505 526 592 617 696 712 775 817 894
4044 087 091 098 104 106 183 223 276
285 335 346 432 452 487 524 556 641
644 673 698 747 756 767 778 798 813
867 870 875 909 918 938 942 988 5001
038 086 089 180 358 388 511 516 595
605 639 698 722 870 966 975 6015 075
084 107 176 187 130 210 215 266 348
366 393 437 588 662 673 782 794 833
862 875 899 959 7005 097 107 182 187
226 314 317 404 427 544 630 741 787
800 813 815 846 857 879 885 896 906
977 978 980 982 991 992 8001 015 061
076 085 139 207 254 276 298 311 404
449 483 486 551 621 657 659 679 749
784 809 877 882 906 922 9016 022 029
190 204 271 344 353 400 406 408 448
455 470 480 481 554 602 671 706 721
845 880 926 933 10007 154 157 199 210
227 239 372 433 437 515 533 583 620
636 677 769 786 900 964 11037 041
072 084 119 135 188 321 326 374 377
390 433 434 492 500 503 691 705 849
862 926 12089 113 117 154 179 208
251 259 358 393 543 548 558 597 624
634 707 741 841 926 972 986 997
13012 034 053 074 088 094 162 175
179 216 287 411 413 415 416 494 519
531 544 559 569 660 669 800 817 837
857 956 14024 037 069 105 109 127
302 454 490 525 538 571 730 767 777
874 895 919 926 937 15044 064 067
150 240 310 311 321 366 371 415 422
448 470 508 538 548 565 566 718 799
800 884 886 897 903 911 957 975 999
16007 037 047 090 118 131 132 148
173 220 295 336 362 368 384 437 481
512 556 636 649 670 698 705 752 762
780 784 797 812 850 17036 059 070
203 276 286 320 345 397 403 404 537
598 627 702 704 767 772 878 884 886
907 922 955 959 18090 130 197 213
230 350 375 403 476 506 572 586 605
606 637 639 645 737 749 794 802 813
867 869 946 973 992 998 19005 056 157
188 231 291 307 360 364 436 468 530
535 578 598 630 678 785 786 883 915
20099 102 115 145 147 175 187 196
207 210 295 328 346 357 362 363 378
422 459 460 481 526 557 623 634 750
768 790 850 961 996 21014 023 031
110 140 224 303 313 328 401 414 431
450 508 528 579 595 691 735 793 811
814 851 925 946 956 977.
à 500 M. 22021 090 094 102 138
156 172 234 248 283 314 333 414 435
479 494 521 542 607 677 698 729 748
754 768 765 772 795 803 880 933
23021 037 088 062 071 121 123 140
146 182 210 218 234 295 324 325 330
347 349 432 439 443 489 501 506 510
594 690 713 768 782 838 839 846 871
874 900 946 948 973 991 997 24016
025 040 093 130 234 254 271 289 299
301 306 359 433 502 518 562 638 650
687 698 708 786 792 817 870 941 973
25118 147 156 204 218 219 275 297
306 351 388 498 565 579 623 788 809
838 840 894 915 929 977 989 26091
182 206 207 214 226 266 413 416 450
466 471 518 614 668 680 766 789 800
860 910 937 958 974 995 27009 100
157 219 288 369 463 524 542 557 579
582 616 620 626 642 795 831 840 845
864 934 28127 161 179 184 236 247
383 384 531 615 644 855 937 29064
073 088 164 262 287 325 331 358 387
413 449 490 528 533 578 615 711 784
861 875 889 914 939 949 30048 113
154 207 271 318 342 370 445 486 529
552 594 614 703 753 794 975 31023
025 087 091 115 132 221 234 258 276
348 352 355 369 386 568 748 822 857
919 928 929 940 32067 122 224 262
277 334 398 436 465 468 529 608 638
717 729 766 784 813 883 884 889 907
987 989.

10) Kamerun-Eisenbahn-Ges. in Berlin, Stammanteile Reihe B.

1. Verlosung am 1. Mai 1911.
Zahlbar mit 20% Aufgeld am 1. Juli 1911.

à 1000 M. 77451—460 761—770
79171—180 80461—470 82401—410
87181—190 92311—320 96071—080
98451—460 99811—820 109761—770
111441—450 115321—330 921—930
116651—660 117391—400 118621
—630 121341—350 128341—350
131431—440 137681—690 139311
—320 140041—050 331—340 341—
350 571—580 141231—240 791—800
145961—970 146771—780 147231
—240.
à 100 M. 56966 57370 511 621
59012 538 698 756 60427 916 61017
475 505 804 879 939 62272 308 732
63352 426 570 919 64006 536 931
65089 099 345 536 556 769 834 918
953 66181 870 67047 286 515 68380
580 950 69019 037 168 397 772 812
70473 557 987 71444 549 821 72379
73186 901 974 74078 116 651 741.

11) Oesterreichische Allgem. Bod.-Cred.-Anstalt, 3% Präm.-Schuldverschr. I. Emiss. 1880.

142. Verlosung am 15. Mai 1911.
Zahlbar (Prämien mit Abzug) am 1. Dezember 1911.

Amortisationsziehung:
Serie 42 592 696 813 873 968
971 1253 1435 1496 1522 1600
1603 1731 1747 2065 2410 2801
2805 3038 3565 3769 3797 Nr. 1
—100 à 200 Kr.

Prämienziehung:
Serie 1630 Nr. 78 (4000), 2206 24 (2000), 3490 3 (2000), 3818 18 (90,000 Kr.).

12) Oesterreichische 4% Eisenbahn-Staats-Schuldverschreibungen d. Galizischen Karl Ludwig-Bahn von 1902.

9. Verlosung am 1. April 1911.
Zahlbar am 1. Juli 1911.

à 10,000 Kr. 1231 232.
à 2000 Kr. 13111—120 20121—130 26951—960 28331—340 31981—990 35031—040 36321—330.
à 400 Kr. 41001—050.

13) Raab-Oedenburg-Ebenfurter Eisenbahn, 3% Gold-Prioritäts-Partial-Oblig.

Verlosung am 2. März 1911.
Zahlbar am 1. Oktober 1911.

I. Emission von 1883.
(28. Verlosung.)

85 135 167 305 313 345 431 432 529
570 571 680 700 762 777 805 879 976
1113 115 139 253 334 482 484 485 500
542 554 627 664 867 959 2017 109
185 651 652 692 871 873 968 986 3197
281 378 397 410 517 559 680 865 986
993 4149 156 200 206 208 218 288
341 841 857 858 999 5089 106 213 273
678 983 6133 277 304 401 409 476 555
678 721 755 761 818 7009 113 201
214 428 579 663 771 8159 252 323 386
618 668 829 830 835 920 9032 043 315
409 521 661 797 799 823 903 904
990 10104 178 191 309 378 461 514
576 597 643 753 786 827 856 956
11101 135 167 207 376 501 511 888
889 941 12008 109 188 220 421 439
650 809 914 921 13065 088 129 177
271 303 343 352 582 583 586 665 675
757 791 792 851 860 864 919 14080
118 186 188 190 299 566 606 615 653
945 15011 025 034 046 386 471 751
889 980 16163 185 203 341 355 438
763 825 880 909 924 17002 007 077
094 104 131 355 412 631 712 811 813
846 18012 022 104 317 442 504 578
630 649 713 863 888 904 19009 090
103 217 223 499 575 635 728 732 880
20036 082 087 100 192 209 221 447
471 573 630 688 701 704 769 846 851
871 21039 052 082 083 270 346 438
486 528 724 728 933 942 977 22002
005 048 146 163 342 433 438 440 508
519 524 584 656 701 841 923 23156
257 258 282 393 514 523 528 577 741
928 995 24201 298 408 444 887 927
25329 352 386 614 650 708 832 906
26169 195 290 303 332 403 409 652
662 955 967 27079 250 385 417 431
432 435 527 662 707 817 822 938
28069 092 251 467 469 503 545 784
838 29002 232 291 380 531 669 760
770 805 853 869 878 30004 015 055
093 138 266 402 430 497 562 690 777
924 31036 038 076 235 528 644 671
712 825 883 967 995 998 32039 072
233 285 685 33051 133 303 395 457
619 670 671 744 751 800 896 34121
253 330 393 396 599 689 757 855 862
990 35160 260 393 469 778 877 939
36036 176 417 445 507 547 634 655
947 965 37191 408 840 867 870 995
38116 161 193 222 267 286 366 416
473 486 666 780 840 39031 201 399
400 510 567 668 690 701 830 869 928
959 999 40034 082 116 283 481 531
552 771 813 826 920 964 41051 228
286 506 686 793 42148 169 257 275
279 294 351 360 425 688 721 731 745
840 883 43000 à 200 Fl.

II. Emission von 1891.
(6. Verlosung.)

35 42 62 109 123 140 216 276 296
380 415 471 497 513 517 611 719 727
729 741 793 834 839 947 969 1006 140
148 177 216 221 225 272 278 320 366
470 557 566 590 622 653 672 689 709
712 952 977 2041 063 160 258 499
624 630 706 899 932 966 3006 011 036
185 195 203 235 236 243 325 397 411
486 683 799 804 813 837 857 898 938
4044 124 134 190 205 355 420 425 430
504 537 589 658 693 699 713 722 776
838 857 974 981 à 200 Fl.

III. Emission von 1897.
(14. Verlosung.)

161—170 841—850 1691—700
7691—700 8191—200 9431—440
11421—430 12021—024 911—920
13951—960 15531—540 à 200 Fl.

14) Serbische Staats-Boden-Kredit-Anstalt (Uprava fondova), 5% Gold-Anleihe.

Bekanntmachung vom Mai 1911.
Sämtliche noch im Umlauf befindlichen Gold-Pfandbriefe sind zur Rückzahlung am 1. Juli 1911 gekündigt worden.

15) Ungarische Hypothekenbank, 4% Prämien-Obl. v. 1884.

69. Verlosung am 15. Mai 1911.
Zahlbar (Prämien mit Abzug) am 15. August 1911.

Amortisationsziehung:
Serie 39 49 254 446 554 570
661 719 965 1200 1234 1390
1395 1462 1551 1568 1646 1655
1975 2355 2558 2934 2940 2957
3042 3119 3311 3388 3410 3469
3490 3708 3714 3759 3863 3889
3893 3971 Nr. 1—100 à 200 Kr.

Prämienziehung:
Serie 17 Nr. 97 (3000), 293 21 (2000), 1596 39 (2000), 1688 25 (2000), 3482 6 (40,000 Kr.).

16) Ungarische Prämien-Anl. (100 Fl.-Lose) von 1870.

110. Verlosung am 15. Mai 1911.
Zahlbar am 15. November 1911.

Serien:
87 293 340 392 450 491 561
599 635 746 781 790 792 806
824 868 921 923 1063 1292 1317
1432 1479 1486 1492 1523 1529
1875 1894 1902 1922 1923 2013
2110 2152 2203 2252 2427 2482
2524 2610 2650 2667 2671 2751
2809 2811 2839 2845 2907 2962
3053 3103 3120 3152 3180 3287
3472 3484 3513 3696 3725 3773
3927 3935 3986 4150 4470 4478
4507 4619 4656 4678 4693 4711
4757 4767 4796 4857 4890 4901
4909 4924 4941 4975 5005 5015
5185 5207 5281 5291 5386 5476
5569 5648 5718 5817 5833 5836
5855 5879 5933 5945 5965.

Prämien:
Serie 87 Nr. 21, 392 15 (200,000), 491 47, 561 32, 1317 23, 1894 1 24 (10,000), 2427 43, 2610 45, 2667 14 23 (2000), 2751 39, 2907 25 35, 2962 41, 3484 16, 4150 46, 4478 42, 4711 10 (2000), 4890 21 (20,000), 5207 7 43 (2000), 5476 16, 5945 43, 5965 4 (2000).

Die Nummern, welchen kein Betrag in ( ) beigefügt ist, sind mit 1000 Kr., alle übrigen in obigen Serien enthaltenen Nrn. mit 360 Kr. gezogen.

Mein Freund der Chauffeur.

Roman
von
C. N. und A. M. Williamson.

[36. Fortsetzung.]

Autorisierte Uebersetzung aus dem Englischen von Gertrud Bauer.

Anstatt wieder eben zu werden, wie ich wider alle Möglichkeit dennoch gehofft hatte, wurde die Straße mit jedem halben Kilometer nur noch immer steiler und endlich so steil, daß man meinte, der Wagen müsse notwendig rückwärts rollen. Aber dennoch fuhr er stetig mit der ersten Geschwindigkeit weiter bergauf und mit einem ganz zuverlässig klingenden stampfenden Geräusch, das keinen Augenblick aussetzte, obgleich selbst der Col di Tenda nicht so steil gewesen war wie dieser Berg. Gewiß, solange das Vertrauen zu dem Wagen nicht ins Wanken kam, gewährte diese Fahrt eine Art wilden Vergnügens, besonders wenn man über die Schulter zurücksah, hinunter in die sieben Täler, die in die grünen Berge eingeschnitten waren, als hätte man sie in einen Smaragd eingegraben. Plötzlich jedoch drehte die Straße, und anstatt einen Satz in die freie Luft hinaus zu machen, legte sie sich einer düsteren grauen Stadt zu Füßen, wie sich ein Hund vor die Füße seines Herrn schmiegt.

Hier hielt Herr Barrymore an, um zu untersuchen, ob sich der Motor heißgelaufen habe, oder ob ihm vielleicht irgendein Aederchen gesprungen sei; aber alles war in Ordnung, und nachdem wir unsere dicken Mäntel angezogen hatten, kletterten Sir Ralph und Bietsche, die die steilsten Stellen zu Fuß erklommen hatten, auch wieder in den Wagen. Wir waren sehr lange bergauf gefahren, viel länger als Herr Barrymore erwartet hatte, und schon lag die Kühle des Abends in der Luft. Außerdem befanden wir uns jetzt mitten in den Bergen und konnten es kaum mehr glauben, daß es uns heute schon zu heiß gewesen war. Als wir nun über den Kamm des Berges fuhren, blies uns ein scharfer Wind entgegen. Ich schauderte und hatte das Gefühl, ich sei nicht dicker als eine Papierpuppe; aber ich wagte nicht, das zu Bietsche zu sagen, sonst hätte sie mich sicherlich ausgelacht, denn ich habe mein Gewicht noch nicht zu weniger als achtundsechzig Kilo herunterbringen können. Unter meinem neuen goldenen Gürtelschloß mit dem Katzenauge nagte es, als hätten diese Katzen auch Zähne und nicht nur Augen, und mir fiel ein, daß es schon hundert Jahre her sei, seit wir zu Mittag gegessen hatten. Es scheint, daß Maida und Bietsche nie hungrig würden, solange sie Automobil fahren, und deshalb konnte ich nun auch nichts sagen, sonst hätte man mich am Ende für alt und gebrechlich gehalten. Und fünf Minuten später war es ebenso gleichgültig, ob ich müde und hungrig war oder nicht, als es bei einem Schiffsuntergang gewesen wäre.

Das erste Ereignis war eine Aussicht — eine Aussicht, so unerwartet und so großartig, daß ich vor Erstaunen mit offenem Munde hinausstarrte. So weit entfernt, so tief unter uns, daß wir gewissermaßen wie aus einem in den Wolken schiffenden Ballon darauf hinuntersahen, lagen zwei Seen wie zwei Saphire, jeder schön in einen Ring von Bergen gefaßt, deren grüne, blaue und purpurne Farben vom Schleier der Dämmerung halb verhüllt waren. Aber durch diesen Schleier hindurch schimmerten weiße Villen an den dunklen Berglehnen wie Perlen, die über's Gebirge gerollt waren und sich im Fallen zerstreut hatten. Und über uns an dem großen, blassen Himmelsgewölbe zitterte und wogte ein fahler, silberner Schein wie ein Reflex des Wassers, den man in einem Haus, das nahe bei einem Fluß steht, auf den Wänden wahrnehmen kann: das war ein Vorläufer, vom Mond ausgesandt, der irgendwo auf seinem Weg zum Horizont en panne geraten war, wie Maida meinte. Sie ist es auch gewesen, die mich auf einige der vorhin geäußerten Gedanken gebracht hat; damals konnte ich allerdings auf keinem davon länger verweilen wegen des nächsten Ereignisses.

Dieses war jedoch nicht abermals eine Aussicht: nein, es war ein Sprung, den wir in die Aussicht hinuntermachten.

Wir hatten die eine Seite eines Hauses bis zum Dachfirst erklettert und rutschten nun die andere Seite wieder hinunter, und das war noch viel schlimmer, ach, hundertmal schlimmer!

Wer war es, der gesagt hat: „Ein Pferd! Mein Königreich für ein Pferd!"? Ich glaube, es muß Richard der Dritte gewesen sein, in dem Stück von Shakespeare, das ich einmal in Denver bei einer Matinee gesehen habe, und mein Mann hat mich damals sehr gescholten, daß ich meine Zeit und sein Geld so unnütz verschwendet hätte. In meinem ganzen Leben habe ich noch mit niemand so inniges Mitgefühl gehabt, wie in diesem Augenblick mit ihm (ich meine Richard den Dritten, nicht meinen seligen Mann). Ich wußte ganz genau, wie es ihm zu Mute gewesen sein muß, wenn auch natürlich die Umstände einigermaßen verschieden waren, denn Automobile gab es damals noch keine, und er stand doch auch auf der Bühne, und eine Schlacht war im Gang, aber hinter der Szene, wahrscheinlich, weil sie da billiger zu machen war.

Aber auch ich hätte all mein Geld hingegeben und sogar den Grafentitel, um ein sanftes, gutes Pferd (je älter, je besser) anstatt unseres Kraftwagens. Selbst im allerschlimmsten Fall hatte doch ein Pferd wenigstens nicht die Absicht, sich umzubringen, während es einem Automobil vollkommen gleichgültig ist, was aus ihm wird, und in jenen entsetzlichen Augenblicken wäre es der einzige Trost gewesen, wenigstens hinter einem Ding mit Selbsterhaltungstrieb in sich zu sitzen.

Wie die Sache lag, war jede meiner Muskeln aufs äußerste gespannt, und ich hatte das Gefühl, jedes einzelne meiner Haare stehe zu Berg, so daß alle Haarnadeln herausfallen müßten. Aber was hatte eine Haarnadel mehr oder weniger oder selbst ein schiefgerutschter „Scheitel" zu sagen für eine Frau, die schon im nächsten Augenblick eine Leiche sein würde! Krampfhaft hielt ich den Atem an, als ob ich keine Luft mehr schöpfen könnte, wenn ich diese entfliehen ließe, während das Automobil den Berg hinunterspazierte, gerade wie eine Fliege, die eine tapezierte Wand hinunterläuft und bei jeder Blume im Muster eine Wendung macht.

In unserem Tapetenmuster kam jede zweite Sekunde eine Blume, das heißt also eine scharfe Kehre für die Fliege, und ich hätte Herrn Barrymore prügeln mögen, der, als ob wir uns nicht in einer Gefahr befänden, die eine Fürbitte in der Kirche wohl gerechtfertigt hätte, ganz unbesorgt weiterschwatzte vom See von Como und vom See von Lecco und von Bellagio dort auf dem Vorgebirge, wo wir nun bald sein würden. Wo wir bald sein würden! Ja wahrhaftig! Offenbar war der Himmel unsere einzige Hoffnung, und ich hätte doch so gerne vorher noch mein Gut in Dalmatien wenigstens gesehen!

Endlich mußte ich aber doch einmal ausatmen, und während ich eben wieder nach Luft schnappte, brachte ich es doch fertig, hervorzustoßen, ich wolle lieber aussteigen und zu Fuß gehen. Aber dieser Kobold von Bietsche (die, wie ich zuweilen denke, ein Wechselbalg sein muß) streichelte mir den Arm und sagte, ich solle doch kein „altes Weib sein, wie der Fürst"; diese Fahrt sei viel zu köstlich, als daß man sie sich durch irgendjemands Nerven verderben lassen könne, und niemand werde ein Haar gekrümmt werden, nicht einmal dem schwarzen Hündchen aus Tirole.

„Wie kannst du das wissen?" keuchte ich.

„O, ich weiß es. Und überdies setze ich mein Vertrauen in unseren Chauffeulier."

„Du solltest lieber dein Vertrauen auf die Vorsehung setzen."

„So weit ist's noch nicht gekommen," war ihre leichtfertige Entgegnung, und ich hätte mich gar nicht gewundert, wenn weiße Bären gekommen wären und Bietsche zerrissen hätten, denn diese Felsengebirge sehen aus, als ob sie wohl Bären, ja noch wildere Tiere beherbergen könnten.

„Du darfst auch nicht vergessen, daß dies der Weg ist, den uns der Fürst empfohlen hat," fuhr Bietsche fort. „Es wäre